चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.6.26	5	5-8

हकृवि का केंद्रीय मत्स्य संस्थान सीआईबीए के बीच एमओयू, पोषण सुरक्षा बढ़ेगी

खारे पानी से बंजर हुई जमीन पर मछली पालन से खुलेगा रोजगार का नया रास्ता

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा में भूमिगत खारे पानी और जलभराव के कारण बंजर हो चुकी हैं या जहां पारंपरिक खेती करना घाटे का सौदा साबित हो रहा था। अब ऐसे अनुपयोगी क्षेत्रों में वैज्ञानिक तरीके से मत्स्य पालन को बढ़ावा देकर किसानों की किस्मत बदली जाएगी।

इस दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय और केंद्रीय संस्थान सीआईबीए, चेन्नई के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता एमओयू हुआ है। अब इस समझौते के बाद देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में ऐसी कम उत्पादक भूमि पर उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन और जल गुणवत्ता का परीक्षण किया जाएगा। इससे बंजर पड़ी जमीन का सदुपयोग होगा, जिससे किसानों को फसल जोखिम से राहत मिलेगी, पोषण सुरक्षा बढ़ेगी और निर्यात व बाजार के नए अवसर पैदा होंगे।

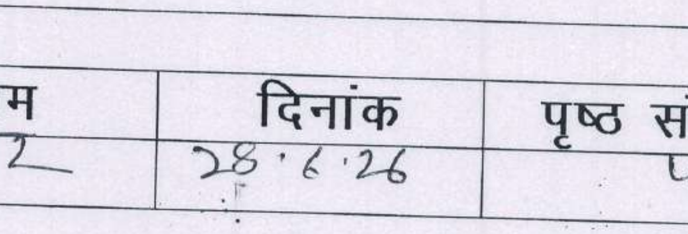

एमओयू के दौरान उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि हकृवि के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय और केंद्रीय संस्थान सीआईबीए, चेन्नई के बीच एमओयू किया है। दोनों संस्थान मिलकर भूमिगत खारे पानी और जलभराव के कारण बंजर हो चुकी जमीन पर मत्स्य पालन की संभावनाओं को लेकर शोध व ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाएंगे। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल, डॉ. अनुराग उपस्थित रहे।

समझौते की मुख्य बातें और फायदे

- **तकनीकी सहायता:** खारे पानी के अनुकूल विशेष मछली और झींगा प्रजातियों का चयन किया जाएगा।
- **फ्री ट्रेनिंग:** किसानों को आधुनिक मत्स्य पालन की बारीकियों को सिखाने के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर लगाए जाएंगे।
- **रोजगार के अवसर:** बंजर हो चुकी लाखों एकड़ भूमि पर मछली पालन शुरू होने से हजारों युवाओं को सीधे रोजगार मिलेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	28.6.26	4	4-5

हकृवि और सी.आई.बी.ए., चेन्नई के बीच हुआ अहम समझौता

खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में मत्स्य पालन को मिलेगा बढ़ावा

हिसार, 27 जून (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर (सी.आई.बी.ए.), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश यादव ने जबकि सी.आई.बी.ए., चेन्नई की ओर से निदेशक डा. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डा. प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में जलभराव (वाटर लॉगिंग) तथा भूमिगत खारे पानी (अंडरग्राउंड सलाइन वॉटर) की समस्या के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। अब इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/ कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे। सी.आई.बी.ए. निदेशक एवं प्रधान वैज्ञानिक डा. कुलदीप लाल ने बताया कि यह देश का एक अग्रणी संस्थान है, जो खारे पानी में जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का कार्य करता है। संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ हरियाणा के किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में भी व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा मिल सकेगा।

समझौते के दौरान कुलपति एवं अन्य।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	28.6.26	12	5-6

कवायद एचएयू व सीआईबीए, चेन्नई (आईसीएआर) के बीच हुआ समझौता

खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में अब मत्स्य पालन को मिलेगा बढ़ावा

कृषि क्षेत्र में अनुसंधान और तकनीकी विकास को मिलेगा बढ़ावा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर (सीआईबीए), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश यादव ने जबकि सीआईबीए, चेन्नई की ओर से निदेशक डॉ. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए। किसानों की आय में वृद्धि और रोजगार के अवसर भी होंगे उपलब्धः प्रो काम्बोज कुलपति प्रो बीआर काम्बोज ने बताया कि हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में जलभराव (वाटर लॉगिंग) तथा भूमिगत खारे पानी (अंडरग्राउंड सलाइन वॉटर) की समस्या के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। अब इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे।

हिसार। समझौते के दौरान कुलपति एवं अन्य। फोटो: हरिभूमि

मत्स्य पालक क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण कदम

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि हकृवि और सीआईबीए के बीच यह सहयोग हरियाणा में मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास, तकनीकी नवाचार तथा किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल, डॉ. अनुराग व संस्थान के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	28.6.26	4	4-5

हकृवि और सीआइबीए चेन्नई के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टीट्यूट आफ ब्रैकिशवाटर एक्वाकल्चर (सीआइबीए) चेन्नई के बीच महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इसका उद्देश्य मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देना है। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश यादव ने जबकि सीआइबीए चेन्नई की ओर से निदेशक डा. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डा. प्रसन्ना कुमार पाटिल ने

- समझौते के माध्यम से अनुपयोगी भूमि वाले क्षेत्रों को मत्स्य पालन के उपयोग में लाने के प्रयास होंगे
- मत्स्य पालन से किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और लोगों को रोजगार भी मिलेगा

हकृवि में समझौते करार के दौरान मौजूद कुलपति बीआर काम्बोज व अन्य • पीआरओ

हस्ताक्षर किए। कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में जलभराव (वाटर लागिंग) तथा भूमिगत खारे पानी (अंडरग्राउंड सलाइन वाटर) की समस्या के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। अब इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में विज्ञानी प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इससे बंजर भूमि को मत्स्य पालन के व्यवसाय में शामिल किया जाएगा जिससे किसानों कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और अनेक लोगों को रोजगार भी मिलेगा। उन्होंने बताया कि ऐसे क्षेत्रों में उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन, जल गुणवत्ता परीक्षण तथा प्रतिष्ठित संस्थानों के मार्गदर्शन में मत्स्य पालन करना अधिक लाभदायक रहेगा। कुलपति प्रो काम्बोज ने बताया कि मत्स्य पालन से अनुपयोगी भूमि का उपयोग होगा जिससे अतिरिक्त आय का स्रोत, रोजगार सृजन, जल संसाधनों का बेहतर उपयोग, फसल जोखिम में कमी, पोषण सुरक्षा, निर्यात एवं बाजार के अवसर भी बढ़ेंगे।

सीआइबीए निदेशक एवं प्रधान विज्ञानी डा. कुलदीप लाल ने बताया कि यह देश का एक अग्रणी संस्थान है, जो खारे पानी में जलीय कृषि (ब्रैकिशवाटर एक्वाकल्चर) के क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का कार्य करता है। संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ हरियाणा के किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा मिल सकेगा।

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रदेश के जिन क्षेत्रों में कृषि करना कठिन है और जहां पानी की लवणता अधिक है, वहां वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से मत्स्य पालन एक लाभदायक विकल्प सिद्ध हो सकता है। इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. राजेश गेरा, डा. आरके गुप्ता, डा. दिलीप बिश्नोई, डा. नितीश बंसल, डा. अनुराग व संस्थान के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	28.6.26	5	3-5

हकृवि और सीआईबीए के बीच हुआ अहम समझौता

खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में मत्स्य पालन को मिलेगा बढ़ावा

हिसार, 27 जून (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर (सीआईबीए), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश यादव ने जबकि सीआईबीए, चेन्नई की ओर से निदेशक डॉ. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए।

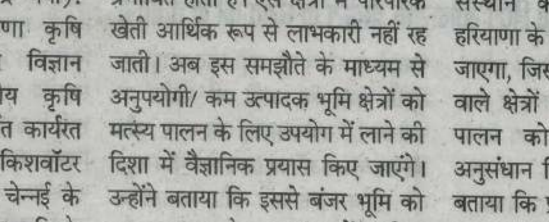

समझौते के दौरान कुलपति एवं अन्य।

किसानों की आय में वृद्धि और रोजगार के अवसर भी होंगे उपलब्धः प्रो बलदेव राज काम्बोज

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में जलभराव (वाटर लॉगिंग) तथा भूमिगत खारे पानी (अंडरग्राउंड सलाइन वॉटर) की समस्या के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। अब इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/ कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इससे बंजर भूमि को मत्स्य पालन के व्यवसाय में शामिल किया जाएगा जिससे किसानों कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और अनेक लोगों को रोजगार भी मिलेगा।

सीआईबीए खारे पानी एवं जलीय कृषि क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का अग्रणी संस्थानः डॉ. कुलदीप लाल

सीआईबीए निदेशक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ कुलदीप लाल ने बताया कि यह देश का एक अग्रणी संस्थान है, जो खारे पानी में जलीय कृषि (ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर) के क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का कार्य करता है। संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ हरियाणा के किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में भी व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा मिल सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रदेश के जिन क्षेत्रों में कृषि करना कठिन है और जहां पानी की लवणता अधिक है, वहां वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से मत्स्य पालन एक लाभदायक विकल्प सिद्ध हो सकता है। इससे न केवल अनुपयोगी भूमि का सदुपयोग होगा, बल्कि किसानों के लिए रोजगार एवं अतिरिक्त आय के नए अवसर भी सृजित होंगे। हकृवि और सीआईबीए के बीच यह सहयोग हरियाणा में मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास, तकनीकी नवाचार तथा किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल, डॉ. अनुराग व संस्थान के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	28.6.26	4	1-6

तैयारी

खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में मत्स्य पालन के बढ़ावे के लिए एचएयू और सीआईबीए के बीच समझौता

श्रम और विज्ञान की जुगलबंदी से बंजर भूमि पर तैरेंगी समृद्धि की उम्मीदें

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत केंद्रीय खारे जल मत्स्य पालन संस्थान (सीआईबीए), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

इसका उद्देश्य अनुसंधान, तकनीकी सहयोग और किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देना है। इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी और कम उत्पादक भूमि को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे।

समझौते के दौरान मौजूद एचएयू हिसार के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज एवं अन्य। स्रोत : विवि

समझौते पर एचएयू की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने हस्ताक्षर किए जबकि सीआईबीए की ओर से निदेशक डॉ. कुलदीप लाल और प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने बताया कि हरियाणा के कई क्षेत्रों में जलभराव और भूमिगत खारे पानी की समस्या के कारण पारंपरिक कृषि उत्पादन प्रभावित होता है।

ऐसे क्षेत्रों में खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। बंजर और जलभराव प्रभावित भूमि को मत्स्य पालन से जोड़कर किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत की जा सकेगी तथा रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

इसके लिए उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन, जल गुणवत्ता परीक्षण और वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। मत्स्य पालन से अतिरिक्त आय स्रोत, रोजगार सृजन, जल संसाधनों का बेहतर उपयोग, फसल जोखिम में कमी, पोषण सुरक्षा तथा निर्यात और बाजार अवसरों में वृद्धि संभव होगी।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल, डॉ. अनुराग और संस्थान के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में अहम कदम

सीआईबीए निदेशक डॉ. कुलदीप लाल ने कहा कि संस्थान खारे पानी में जलीय कृषि अनुसंधान एवं तकनीकी विकास में अग्रणी है। इस सहयोग से हरियाणा के किसानों को विशेषज्ञता का लाभ मिलेगा और खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा मिलेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कठिन कृषि परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में मत्स्य पालन एक लाभकारी विकल्प साबित हो सकता है। यह समझौता राज्य में मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास, तकनीकी नवाचार और किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दक्ष दर्पण	27.06.2026	-----	----

हकृवि और सीआईबीए, चेन्नई (आईसीएआर) के बीच हुआ अहम समझौता

खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में मत्स्य पालन को मिलेगा बढ़ावा

दक्ष दर्पण

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर (सीआईबीए), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश यादव ने जबकि सीआईबीए, चेन्नई की ओर से निदेशक डॉ. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए।

फोटो कैप्शनः समझौते के दौरान कुलपति एवं अन्य

किसानों की आय में वृद्धि और रोजगार के अवसर भी होंगे उपलब्धः प्रो बलदेव राज काम्बोजः कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में जलभराव (वाटर लॉगिंग) तथा भूमिगत खारे पानी (अंडरग्राउंड सलाइन वॉटर) की समस्या के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। अब इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इससे बंजर भूमि को मत्स्य पालन के व्यवसाय में शामिल किया जाएगा जिससे किसानों कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और अनेक लोगों को रोजगार भी मिलेगा। उन्होंने बताया कि ऐसे क्षेत्रों में उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन, जल गुणवत्ता परीक्षण तथा प्रतिष्ठित संस्थानों के मार्गदर्शन में मत्स्य पालन करना अधिक लाभदायक रहेगा। कुलपति प्रो काम्बोज ने बताया कि मत्स्य पालन से अनुपयोगी भूमि का उपयोग होगा जिससे अतिरिक्त आय का स्रोत, रोजगार सृजन, जल संसाधनों का बेहतर उपयोग, फसल जोखिम में कमी, पोषण सुरक्षा, निर्यात एवं बाजार के अवसर भी बढ़ेंगे।

सीआईबीए खारे पानी एवं जलीय कृषि क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का अग्रणी संस्थानः डॉ कुलदीप लालः सीआईबीए निदेशक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ कुलदीप लाल ने बताया कि यह देश का एक अग्रणी संस्थान है, जो खारे पानी में जलीय कृषि (ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर) के क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का कार्य करता है। संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ हरियाणा के किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में भी व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा मिल सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रदेश के जिन क्षेत्रों में कृषि करना कठिन है और जहां पानी की लवणता अधिक है, वहां वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से मत्स्य पालन एक लाभदायक विकल्प सिद्ध हो सकता है। इससे न केवल अनुपयोगी भूमि का सदुपयोग होगा, बल्कि किसानों के लिए रोजगार एवं अतिरिक्त आय के नए अवसर भी सृजित होंगे। हकृवि और सीआईबीए के बीच यह सहयोग हरियाणा में मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास, तकनीकी नवाचार तथा किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल, डॉ. अनुराग व संस्थान के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ-छोर	27.06.2026	-----	----

खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए हकृवि और सीआईबीए में समझौता

नभ-छोर न्यूज ⏭ 27 जून

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर (सीआईबीए), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश यादव ने जबकि सीआईबीए, चेन्नई की ओर से निदेशक डॉ. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में जलभराव (वाटर लॉगिंग) तथा भूमिगत खारे पानी (अंडरग्राउंड सलाइन वॉटर) की समस्या के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। अब इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/ कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इससे बंजर भूमि को मत्स्य पालन के व्यवसाय में शामिल किया जाएगा जिससे किसानों कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और अनेक लोगों को रोजगार भी मिलेगा। उन्होंने बताया कि ऐसे क्षेत्रों में उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन, जल गुणवत्ता परीक्षण तथा प्रतिष्ठित संस्थानों के मार्गदर्शन में मत्स्य पालन करना अधिक लाभदायक रहेगा।

सीआईबीए निदेशक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ कुलदीप लाल ने बताया कि यह देश का एक अग्रणी संस्थान है, जो खारे पानी में जलीय कृषि (ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर) के क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का कार्य करता है। संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ हरियाणा के किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में भी व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा मिल सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रदेश के जिन क्षेत्रों में कृषि करना कठिन है और जहां पानी की लवणता अधिक है, वहां वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से मत्स्य पालन एक लाभदायक विकल्प सिद्ध हो सकता है। इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल, डॉ. अनुराग आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	27.06.2026	-----	----

हकृवि और सीआईबीए, चेन्नई आईसीएआर के बीच समझौता ज्ञापन पर हुए हस्ताक्षर

खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में मत्स्य पालन को मिलेगा बढ़ावा

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर (सीआईबीए), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश यादव ने जबकि सीआईबीए, चेन्नई की ओर से निदेशक डॉ. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/ कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे। बंजर भूमि को मत्स्य पालन के व्यवसाय में शामिल किया जाएगा जिससे किसानों कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और अनेक लोगों को रोजगार भी मिलेगा। ऐसे क्षेत्रों में उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन, जल गुणवत्ता परीक्षण तथा प्रतिष्ठित संस्थानों के मार्गदर्शन में मत्स्य पालन करना अधिक लाभदायक रहेगा। कुलपति ने बताया कि मत्स्य पालन से अनुपयोगी भूमि का उपयोग होगा जिससे अतिरिक्त आय का स्रोत, रोजगार सृजन, जल संसाधनों का बेहतर उपयोग, फसल जोखिम में कमी, पोषण सुरक्षा, निर्यात एवं बाजार के अवसर भी बढ़ेंगे। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	27.06.2026	-----	----

हकृवि और सीआईबीए आईसीएआर के बीच हुआ अहम समझौता

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। (अभिनव शर्मा) चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर (सीआईबीए), चेन्नई के बीच मत्स्य पालन एवं जलीय कृषि के क्षेत्र में अनुसंधान, तकनीकी सहयोग तथा किसानों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौते पर हकृवि की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ रमेश यादव ने जबकि सीआईबीए, चेन्नई की ओर से निदेशक डॉ. कुलदीप लाल एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ प्रसन्ना कुमार पाटिल ने हस्ताक्षर किए। किसानों की आय में वृद्धि और रोजगार के अवसर भी होंगे उपलब्धः प्रो बलदेव राज काम्बोज कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में जलभराव (वाटर लॉगिंग) तथा भूमिगत खारे पानी (अंडरग्राउंड सलाइन वॉटर) की समस्या के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित होता है। ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक खेती आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं रह जाती। अब इस समझौते के माध्यम से अनुपयोगी/ कम उत्पादक भूमि क्षेत्रों को मत्स्य पालन के लिए उपयोग में लाने की दिशा में वैज्ञानिक प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इससे बंजर भूमि को मत्स्य पालन के व्यवसाय में शामिल किया जाएगा जिससे किसानों कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और अनेक लोगों को रोजगार भी मिलेगा। उन्होंने बताया कि ऐसे क्षेत्रों में उपयुक्त मछली प्रजातियों का चयन, जल गुणवत्ता परीक्षण तथा प्रतिष्ठित संस्थानों के मार्गदर्शन में मत्स्य पालन करना अधिक लाभदायक रहेगा। कुलपति प्रो काम्बोज ने बताया कि मत्स्य पालन से अनुपयोगी भूमि का उपयोग होगा जिससे अतिरिक्त आय का स्रोत, रोजगार सृजन, जल संसाधनों का बेहतर उपयोग, फसल जोखिम में कमी, पोषण सुरक्षा, निर्यात एवं बाजार के अवसर भी बढ़ेंगे।

सीआईबीए खारे पानी एवं जलीय कृषि क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का अग्रणी संस्थान : डॉ कुलदीप लाल

सीआईबीए निदेशक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ कुलदीप लाल ने बताया कि यह देश का एक अग्रणी संस्थान है, जो खारे पानी में जलीय कृषि (ब्रैकिशवॉटर एक्वाकल्चर) के क्षेत्र में अनुसंधान एवं तकनीकी विकास का कार्य करता है। संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ हरियाणा के किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे खारे पानी एवं जलभराव वाले क्षेत्रों में भी व्यावसायिक मत्स्य पालन को बढ़ावा मिल सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रदेश के जिन क्षेत्रों में कृषि करना कठिन है और जहां पानी की लवणता अधिक है, वहां वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से मत्स्य पालन एक लाभदायक विकल्प सिद्ध हो सकता है। इससे न केवल अनुपयोगी भूमि का सदुपयोग होगा, बल्कि किसानों के लिए रोजगार एवं अतिरिक्त आय के नए अवसर भी सृजित होंगे। हकृवि और सीआईबीए के बीच यह सहयोग हरियाणा में मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास, तकनीकी नवाचार तथा किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. दिलीप बिश्नोई, डॉ. नितीश बंसल, डॉ. अनुराग व संस्थान के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।